गवाही

मेरा नाम राजकुमार है। मेरा जन्म गाँव ततार पुर, जिला अलीगढ़ सन 1967 में हुआ। मैं एक हिन्दू परिवार से सम्बन्धित हूँ । जब मैं चार वर्ष का था, तब मेरी बहन ने मुझे गोद ले लिया, और मैं उनके साथ दिल्ली आ गया। मेरे परिवार में सात बहन–भाई है, जिसमे कि मैं छठे नम्बर का बच्चा हूँ, हम तीन भाई और 4 बहनें हैं। बड़ा भाई रघुवर दयाल ए.एम.सी फोर्स में सर्विस करता था। मैं, बड़ी बहन–बहनोई के पास रहता था, उस समय मेरे बहन बहनोई की कोई संन्तान नहीं थी। इसलए वह मुझे बहुत ज्यादा प्यार किया करते थे, और हमेशा साथ ही रखते थ। वे बेटे से भी ज्यादा प्यार, और हर जरुरत को पूरा करते थे। जब मैंने होश संभाला तब उस समय मेरे पिताजी कलकत्ता में शिपिंग कारपोरेशन में गार्ड (चौकीदार) की नौकरी करते थे। इधर दीदी का प्यार तथा माता पिता का प्यार, और भाई का प्यार मुझे दिया। मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं होने देते थे! इसलिए मैं काफी एक्टिव था। मैं छोटी से उम्र में लिफाफे बनाने का काम करता था! इसलिए मेरे पास जेब खर्च की कमी नहीं होती थी तथा बहुत सारे फैसले मेरे अपने हुआ करते थे।

मैने 1978 में R.S.S. की सदस्यता प्रहण की ! मैं 1978 से R.S.S की शाखा में जाने लगा जिसके गुरु लक्ष्मी जी थे, जो पानी की टंकी वाले पार्क में शाखा लगाते थे। मैं सेवा भारती में भी जाता था। तथा मैं R.S.S. में बढ़ता चला गया, जिसमें कि हमें अलग–अलग तरह के खेल सिखाऐ जाते थे, तथा लाठी चलाना, तलवार चलाना, बल्भम चलाना, तथा अन्य शस्त्र चलाना सिखाते थे, तथा मैं दुसरी तरफ कराटे, व्यायाम इत्यादि की शिक्षा पाकर अत्यधिक इनमें वढता चला गया, और फिर मैं शरारत में भी बढता चला गया । मेरे पास बहुत ज्यादा ताकत है इस बात का धमंड किया करता था, और मैं 3–4 लोगों की एक हीरो की तरह से पिटाई कर देता था, मैंने बहुत से बड़े – 2 बदमाशों की पिटाई लगाई और खुद एक बहुत बड़ा बदमाश का नाम पा लिया, फिर मैं बड़े–बड़े लोगो के साथ रहने लगा और लोग मुझे जानने लगे, मुझ को गुस्सा बहुत आता था। (और जब आता था तो जाता नहीं था) और मैं अपने आपको फिल्मी हीरो ''धर्मेन्द्र'' समझता था, इसी दौरान मेरा बड़ा भाई जो आर्मी में था, उन्होने एक खुली सभा मैं जो की इंडिया ऐवरी होम क्रूसैड़ (India Every Home Crusade) की थी, में यीशु मसीह का प्रचार सुना और वह प्रचार उसके दिल में बस गया और उसने उनके पास जाकर जानकारी ली तथा कुछ समय के बाद यीशु मसीह को परमेश्वर कर के अपना लिया, तथा मेरे भाई ने बहुतो को यीशु मसीह की शिक्षा दी, तथा अपने गाँव जाकर भी यीशु मसीह की शिक्षा दी । अपने घर मे भी यीशु मसीह की अच्छी–अच्छी शिक्षा देने लगे, तथा मेरे भाई ने मेरे माता पिता से सलाह की की हम सब बच्चों को किसी अच्छे स्कूल में डालेंगे जहाँ अच्छी शिक्षा मिले । इस विषय पर मेरे माता पिता व बहन से उनकी काफी बहस हुई और सब को मेरे भाई की बात माननी पड़ी क्योंकि मेरे भाई ने कहा था कि मैं ही इनका सब खर्चा उठाऊंगा, और मेरे भाई ने गांव कई और लोगो के बच्चों को भी मना लिया। मेरे भाई ने इसाई स्कूल ''इन्ग्राहम'' अलीगढ़ में हमारा नाम लिखा दिया, जो कि हमारे गांव से 60 Km पर है, और मुझको बहन के यहाँ से वुलाकर अलीगढ़ इन्ग्राहम स्कूल में भरती करा दिया, फिर मैने वहा पर चर्च के ''रुल'' सीखे। जैसे की प्रार्थना करना, गीत गाना, तथा अन्य बातें, यहाँ तक स्कूल की प्रार्थना मैं भी बाईबल से प्रवचन दिया जाता था, इसलिए मैंने वहाँ पर बाईबल की बहुत सारी बातें सीखी। मैं होस्टल का काफी शरारती लड़का था, और बहुत लड़ाईयाँ किया करता था। यहाँ तक शरारती था कि होस्टल व स्कूल का सबसे शरारती लड़का बन गया। मैं होस्टल की दीवार कूद कर फल व सब्जियों की चोरी करता था। मैं इन्ग्राहम स्कूल से 8वी पास करने के वाद वापस दिल्ली अपने बहन–बहनोई के पास आ गया। दिल्ली में 9वी कक्षा में भरती होने के वाद फिर से R.S.S. की शाखा ज्वॉइन कर ली जिस के गुरुजी थे रमेश जी जो की ब्लाक न0 2 दक्षिण पुरी में रहते थे। इसी दौरान मेरी संगत बिगड़ती चली गई। आर्मी में रहते हुए मेरा भाई मेरी फिक्र करता था और वह परिवार में और मुझको पत्र लिखा करता था – कि प्रभु का स्मरण किया करो, तथा पास्टर R.K. माला से मिला करो। मेरा भाई अपनी सर्विस पर चला गया, और वह वहाँ से ही मुझ को व परिवार वालो का तथा पास्टर माला को पत्र लिखा करता था। फिर पास्टर माला हमारे घर पर आने लगे, मैं पास्टर साहब का दिल रखने के लिए कह देता था कि मैं चर्च आऊंगा और कभी – कभी

जव मेरा भाई पत्र लिख कर मुझे कहता था, कि राजू चर्च जाया करो और वहुत सारी बातें लिखता था, तव मैं चर्च चला जाता था ताकि मेरे भाई का अनादर न हो क्योंकि मैं अपने भाई को बहुत प्यार करता हूँ। कई बार मैं चर्च का दरवाजा छू कर आ जाता था, ताकि अपने भाई को सच बोल सकूं कि मैं चर्च गया था। यह कर के मैं अपने दिल को शान्ति दिया करता था कि मैंने अपने भाई की बात मानी है। मेरी संगत बिगड़ती चली गई, मैं रोमांस के चक्कर में भी बहुत रहा यहाँ तक की कुछ समय के लिए मैं एक ''तांत्रिक बाबा'' जो वसंन्त विहार गांव में रहता था उसका चैला वन गया, मैं और मेरा दोस्त रज्जा जो कि आज भी तांत्रिक है, दोनो मिल कर उस बाबा की सेवा करते थे जैसे पैर दबाना, प्रसाद चढाना, अगरबत्ती, धूप वत्ती व लोंग चढाना, ये सब काम मैं वहाँ पर करता था। मैं बीरवार को पीर बाबा की दरगाह पर भी जाया करता था। हर सायं : काल के समय वहाँ जाकर मन्नत मांगा करता था, मगर मेरी मनोकामना पूरी न हुई।

मैं बनारस जा कर गंगा में कुछ सरकन्डो को भी बांध कर आया, लेकिन शांति न मिली, सब कुछ खोता ही जा रहा था, पा कुछ भी नहीं रहा था। मेरे घर में अन्दर एक और खास बात थी कि मेरी मां बहुत ज्यादा पूजा पाठ किया करती थी, उनके उपर वहुत सारे देवी देवता सवार हो जाते थे जिसमें रवास तौर से मेरी मां काली कलकत्तावाली की पूजा करती थी, मेरी माता जी देवी देवताओं को बलि वगेरह ज्यादा चढाती थी। जैसे – प्रसाद के द्वारा तथा जानवरों की बलि द्वारा देवी देवताओं को प्रसन्न किया करती थी। बहुत बार अगर किसी देवी देवता की बलि नहीं चढाई या प्रसाद नहीं चढाया तो वह नाराज होकर मां को तंग करते है, और वहुत बार मेरी माताजी के उपर अलग –अलग देवी–देवता आ जाते थे, और जव उनके उपर काली सवार होती थी तब मेरी मां का चेहरा व उनका रुप देखता नहीं बनता था और मैं स्वयं डर जाता था। और अपना चेहरा रजाई में छुपा लेता था। मेरी मां के गले व बाजू में 4–5 ताबीज हमेशा बन्धे रहते थे। इतनी पूजा पाठ के उपरान्त और ताबीजों, देवताओं के रहते भी वह हमेशा बीमार रहती थी। उसी समय मेरे पिता जी ने दक्षिण पुरी, दिल्ली में मकान ले लिया, और पूरा परिवार मां, भाई बहन सभी वहाँ पर आ कर रहने लगे। और दीदी के घर के पास मकान होने के कारण मां ने मुझे अब अपने पास बुला लिया और मैं अपनी मां के साथ रहने लगां पिताजी अभी रिटायर नहीं हुए थे। तथा मां मुझे बहुत प्यार करती थी। मेरा बड़ा भाई हमेशा प्रयास करता था, कि मेरा परिवार प्रभु यीशु की शिक्षा को ले ले। उसकी कोई नहीं सुनता था – मगर सब उसे खुश थे। मैं अपने आप को जानता था वह सब कुछ छोड़ना नहीं चाहता था। मैं उन्हीं दोस्तो मैं खुश था और मगन रहता था। मैने कई बार चाहा कि सब कुछ छोड़ दुंगा मगर छोड़ न पाया, मैने दो बार खुदकुशी करने की कोशिश की, मगर वो दवाइयां मेरा कुछ न बिगाड़ पाई। एक बार मैं D.B.F. (Delhi Bible Fellowship) चर्च गया, वहाँ पर कोई मुझसे बात नहीं करता था, सभी आपस में बातें करते थे। मैं अकेला वहीं खड़ा रहता था, और चला आया करता था।

फिर कुछ दिनों के बाद, जब में प्रार्थना सभा में गया तो बाईबल मैं से प्रकाशितवाक्य 2:17 का अध्ययन हो रहा था कि, जिसके कान हो वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहती ह ै– जो जय पाए, उसको मैं गुप्त मन्ना में से दुंगा, और उसे एक श्वेत पत्थर भी दुंगा, और उस पत्थर पर एक नाम लिखा होगा, जिसे उसके पाने वाले के सिवाय अैर कोई न जानेगा। और तब सब कलीसियाऐ जान लेंगी कि हृदय और मन का परखने वाला मैं ही हूँ। और मैं तुम में से हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा। परन्तु डरपोकों, और अविश्वासियों, और धिनौनों, और हत्यारों और व्याभिचारियों, और टोन्हो और मूर्ती पूजको, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है। ''यह दूसरी मृत्यु है''। तथा जैसा लिखा है कि जिसके कान हो वह सुन ले, तथा हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला दूंगा।

यह सब बातें मेरे मन और मस्तिष्क में बैठ गई और मैं डरने लगा कि अव मेरा क्या होगा, मै काफी दिनो इन सब विचारों से जो मेरे अन्दर उत्पन्न हो रहे थे इन से परेशान रहा, और यह विचार कि जिस के कान हो वह सुन ले, कि मैं हर एक के कामों के अनुसार वदला दूंगा – इन बातों से मै डर गया, तथा 'दूसरी मृत्यु'' का डर मेरे अन्दर बैठ गया, इन सब वचनों को पढ़ने और सुनने के बाद मैं एक सोच

में था कि ये कैसी मृत्यू, ''दूसरी मृत्यु''। मैं डरपोक तो नहीं, मगर इसके अन्दर जितने शब्द है, वो सारे कार्य मेरे अन्दर है। मैं वो सारे कार्य करता हूँ जो परमेश्वर ने मना किया है। क्या मैं इस जीवन भर पापी ही रहूँगा, और क्या पापी ही रहकर मरुंगा, यह प्रश्न मेरे दिल और दिमाग में बैठ गया, मै काफी समय इस से विचलित रहा, तथा मैं कम पढ़ा लिखा व्यक्ति इसको ठीक से समझ नहीं पा रहा था। मैं फिर पास्टर माला जी के पास गया। और उन्होंने बाईबल के पदों द्वारा समझाया कि यदि हम अपने पापों को मान ले तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमे सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है। (युहन्ना 1 : 9)

परन्तु हम ज्योति मै चले जैसा कि वह स्वयं ज्योति है। तो हमारी सह–भागिता एक दूसरे से है, और उसके पुत्र का लोहू हमें एव पापों से शुद्ध करता है (युहन्ना 1 : 7)

मैं एक सोच में था कि हमारे घर में वहुत से देवी देवताओं का राज्य चलता है मगर फिर भी परेशानी, कहीं बीमारी, कहीं तंगी, और बेरंग का जीवन । हमारे लोग कहते है कि भगवान पापी का नाश करने आये, मगर ये क्या कि यीशु मसीह ने अपना लहू बहाया कि हम पापी बच जाए। एक बात यह है कि लोग पापी को मारते है, मगर ये यीशु मसीह हम पापियों को पाप से बचाने के लिए आये। पापियों का नाश करने नहीं पर पाप का नाश करने आये । मैने बहुत सारे अध्यन किए, तथा खोज करी और पाया की यीशु मसीह ही परमेश्वर है जो इंसान को अपनी सन्तान के रुप में लेते है और कोई भी पिता अपनी सन्तान को मारता नहीं है, बल्कि प्यार करता है। परमेश्वर नें हमसे इतना प्यार किया कि हमें पाप में नही रहने दिया । बल्कि स्वयं पृथ्वी पर यीशु मसीह का रुप लेकर आ गये तथा सब कुछ करके दिखा दिया कि एक परमेश्वर की संतान को कैसा होना चाहिए। मैंने यह सब खोज करने के वाद प्रभु यीशु मसीह को परमेश्वर समझ कर ग्रहण किया और अपने सारे अपराध प्रभु यीशु के सम्मुख रख दिया क्यो कि बाईबल कहती है।

मनुष्य तो हृदय से विश्वास करता है जिसका परिणम धार्मिकता होता हैं और मुँह से अंगीकार करता है जिसका परिणाम उद्धार होता है। (रोमियो 10 : 10)

इस प्रकार मैने प्रभु यीशु को ग्रहण किया और प्रभु में बढ़ने लगा। मैं प्रत्येक रविवार को आराघना करने जाता हूं। हर समय में जाया करता और अत्यधिक बाईबल अध्यन करता जिसमें कि प्रभु की आज्ञा भी मैने पूरी की और ''21 अप्रेल 1989'' में बप्तिस्मा लिया और फिर प्रेरितो से शिक्षा पाना, रोटी तोडना सभी काम करने लगा। मगर बाहर लोगो को जव में प्रभु यीशु के वारे मे बताता तो मेरे दोस्त और जो मेरा पुराना जीवन जानते थे वे कहते कि देखो ''नौ सौ चूहे खा कर बिल्ली हज को चली'' ''देखो यह तो हौलेन्ड का हो गया है। या अमरीकन हो गया, या इंगलैन्ड का हो गया''। और कहते कि अपने बाप को छोड़ कर दूसरे को बाप वना लिया। अन्य अन्य बातें। गुस्सा तो वहुत था और उन सभी पर आता भी था, मगर यीशु का प्रेम उन सब बातो के बावजूद भी उनके उपर प्यार दिखता था। मै वहुत खुश था। क्योंकि जिस ''शान्ति'' को मैं ढूढता था वह अब मेरे पास थी। इसी रीति से चलते मेरा विवाह मेरठ शहर के एक विश्वासी परिवार में हुआ और तभी अचानक एक ऐसी स्थिति आयी की मेरे हाथों से काफी अपराध हो गये, मेरे अन्दर फिर से वही शत्रु आ गया जिसके परिणाम स्वरुप मुझको 1993 – 11 सितम्वर को जेल जाना पड़ा। लेकिन खुशी की बात यह है कि – यीशु मसीह ने मुझको वहां पर भी अकेला नहीं छोडा और वहां पर – (गिडीयन–संस्था) की सेवकाई में कई लोग बाइबल बाँटने वाले जेल के अन्दर आये और उन्होने वहा पर बाईबल बाँटी। फिर गीत, संगीत, वचन और आराधना की और फिर दोबारा मुझको 'यीशु के बचन याद आये। मैंने तो प्रभु को छोड दिया था और फिर दोबारा पाप कर बैठा था मगर प्रभु यीशु जी ने मुझको नहीं छोडा और आज भी वेा मेरे पास दुबारा आ गये अपने 'वचन' के द्वारा मेरे अन्दर फिर खुशी ने दस्तक दिया। फिर मैंने निर्णय किया कि आज के बाद कभी भी कुछ भी हो जाये मैं प्रभु को नहीं छोडूंगा। मैनें वहीं पर जेल में कैदीयों को सुसमाचार सुनाया और अपनी कहानी सुनाई। उन्होने भी मेरा मजाक उड़ाया और कहा कि तू अगर प्रभु का सेवक है तो जेल मे क्यें है। मैने अपने अपराधो को उनके

सामने माना वो काफी सुधर चुके थे। फिर मेरी जमानत हुई और मै सबसे पहले उस व्यक्ति के पास गया जिसको मैने मारा था उससे माफी मांगी उसके परिवार से भी माफी मांगी।

फिर मैनें अपनी कलीसिया के सामने खडे हो कर सबसे माफी मांगी और परमेश्वर से प्रार्थना की कि आगे से मुझको अपने चरणों में रखें। अब प्रभु ने मेरे प्रियों, सम्भाला है और खुश और आनन्दित रखा है। इसी रीति से धीरे धीरे मेरी माँ ने, भाई बहन सभी ने प्रभु को ग्रहण किया और सभी को प्रभु ने आशिष दी । अब मेरे परिवार में – मैं, मेरी पत्नी अनीता, बडा बेटा हनोक, बेटी ऐलिशिबा और छोटी बेटी अनुग्रह, सभी को प्रभु सम्भाले हुये है। प्रभु ने मुझको सेवा करने का आदेश भी दे दिया है। अब मै अपने पूरे परिवार के साथ प्रभु यीशु के पीछे चल रहा हूं और प्रभु का धन्यवाद करता हूं कि प्रभु ने मुझको समय पर बचा लिया। तथा मैं दूसरों को जो मेरे जीवन की गवाही पढ़ रहें है, उन्हे यह (दिखाना) बताना चाहता हूं कि यीशु मसीह किसी देश अथवा जाति विशेष का प्रभु नहीं बल्की सारी दुनिया को बनाने वाला और चलाने वाला परमेश्वर है।

यीशु मसीह ने सबसे प्रेम किया है। लेकिन विशेष रुप से मसीह ने पापियों से प्रेम किया है। यीशु मसीह के पास सभी की समस्या का समाधान है। अगर आप उसके पास एक कम बढायेंगे तो वह आप के पास दस कदम बढायेगा। अगर आज आप यीशु मसीह को पास लाना चाहते हैं, तो वो अपने दानो हाथों से आप को बुला रहा है, क्यो कि देर हो जाने पर पछताना होगा। जीवित मनष्य सब कुछ कर सकता है, लेकिन प्राण निकल जाने के बाद नहीं।

प्रिय भाई / बहन – आज मौका है – क्योंकि कल किसी ने नहीं देखा– अगर आप अनंत जीवन पाना चाहते है। और शान्ति का जीवन चाहते हैं, तो यीशु मसीह के पास आना पड़ेगा। । शान्ति मार्ग अथवा पाप मार्ग । यह फैंसला आप पर छोड़ा हैं, कि आप कौन से मार्ग में चलना चाहते है। आप ऊपर दिये मार्ग में से एक मार्ग चुन लें। मैं प्रार्थना करता हूं तथा करता रहूंगा की यीशु मसीह शान्ति–मार्ग चुनने में आपकी सहायता करें। प्रभु यीशु मसीह आप पर अनुग्रह करे तथा आपको शान्ति दे।

प्रभु यीशु के बारे में या पाप व आत्मा, शान्ति अनंत जीवन, स्वर्ग–नरक के वारे मे जानना चाहते है, तो सम्पर्क करें .....

राजकुमार,
संस्थापक एवं सचिव,
शान्ति–मार्ग,
9810020843